International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

# मुस्लिम समाज में नारी सशक्तिकरण

**Dr. Purushottam, B. Mangate**
Head of Sociology Department,
College of Arts and Sciences, Chincholi, Tahsil – Kannada,
Dist. Chhatrapati Sambhaji Nagar (Aurangabad), Maharashtra, India

**सारांश:-**

भारत में मुस्लिम संस्कृति का अपना महत्त्व है। मुगलकाल का गहरा प्रभाव आज तक भारतीय संस्कृति में सरलता से देखा जा सकता है। विभिन्न सरकारों द्वारा इनके कल्याण के लिए विभिन्न योजनाएं भी बनी है। वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा, व्यवसाय एवं अन्य क्षेत्रों में महिलाओं ने नया मुकाम हासिल कर रही है। मुस्लिम शिक्षा एवं जागरूकता के प्रसार से भारतीय मुस्लिम महिलाओं का भविष्य उज्ज्वल है। वैश्वीकरण ने मुस्लिम महिलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, परंतु शिक्षा, तकनीकी पहुँच और वैश्विक संवाद से वे अब अधिक सशक्त हो रही हैं। यह आवश्यक है कि वैश्वीकरण को एक साधन के रूप में देखा जाए, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर मुस्लिम महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मसम्मानी बनाए।

भारतीय समाज में नारी का स्थान पूज्यनीय रहा है समाज तथा सभ्यता के विकास में महिलाओं का योगदान सर्वोपरि रहा है। भारतीय पौराणिक संदर्भों में स्त्री को देवी का स्थान प्राप्त है। शक्ति की देवी दुर्गा, कला की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी मानी गयी हैं और आज भी उनकी मान्यता है। प्राचीन भारत के इतिहास में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदि विदुषियों का उल्लेख है। भारतीय समाज में सभी कालों में महिलाओं की स्थिति एक जैसी नहीं रही, और समय-समय पर महिलाओं की स्थिति परिवर्तित होती रही है। वैदिक काल में भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति उन्नत थी। महिलाओं को समाज व परिवार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। पति व पत्नी दोनों मिलकर यज्ञ करते थे उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी। स्मृति काल में वैदिक नियमों को तिलांजलि दे दी गयी। इस युग में महिलायें परतन्त्र, पराधीन, निःसहाय व निर्बल बन चुकी थीं। मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति में और गिरावट आयी। धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए ब्राम्हणों ने कड़े नियमों का प्रावधान किया। 5 से 8 वर्ष की आयु में विवाह होने लगे, पर्दा प्रथा का प्रचलन हुआ व सती प्रथा का प्रचलन हुआ। 18 वीं सदी के अंत से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक भारत में अंग्रेजों का शासन रहा। इस काल में राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर जैसे महापुरुषों ने महिलाओं की दशा सुधारने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये। ब्रिटिश शासनकाल में भी महिलाओं की स्थिति बहुत खराब थी। 15 अगस्त 1947 को देश को स्वतन्त्रता मिली। आजादी के बाद महिला विकास, महिला सहभागिता व महिला सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक कार्य प्रारम्भ हुआ।

**महिला सशक्तिकरण का अर्थ**- महिला सशक्तिकरण से आशय यह है कि महिलायें अपनी क्षमताओं और शक्तियों का पूर्णरूप से उपयोग कर सकें जिससे वे स्वयं निर्णय लेने की स्थिति में आ जाएँ।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

महिला सशक्तिकरण का सही अर्थ तभी सम्भव हो पायेगा जब वह ससम्मान उस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास कर सकती हो जिस लक्ष्य को वह पाना चाहती है। उसे संचार का हक हो, आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के पर्याप्त साधन उपलब्ध हों, समाज व राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हो उसे अपनी योग्यता बढ़ाने का अवसर मिले, देश की प्रगति तथा देश का गौरव बढ़ाने में सहयोग का पूरा अवसर हो। समाज रूपी रथ में यदि एक पहिया पुरुष और दूसरा नारी तो उसे भी उतना ही सबल और सुयोग्य होना जरूरी है जितना पुरुष है। यही सबलता और सुयोग्यता महिला सशक्तिकरण है।

भारत में मुस्लिम संस्कृति का अपना महत्त्व है। मुगलकाल का गहरा प्रभाव आज तक भारतीय संस्कृति में सरलता से देखा जा सकता है। बल्कि भारतीय संस्कृति को सबसे बड़ी विशेषता है कि उसने विभिन्न संस्कृतियों को अपने में पचा लिया और इतनी घुल-मिल गई कि वे भारतीय संस्कृति के अंग बन गईं। ठीक इसी तरह ईसाई भी हैं। यह भी अल्पसंख्यक हैं. पर अल्पसंख्यकों में मुस्लिम अल्पसंख्यकों की जनसंख्या हिन्दू के पश्चात् आती हैं। अनुमान है कि इस समय में भारत में इनकी जनसंख्या 20 करोड है। इनकी अपनी आर्थिक-सामाजिक व राजनीतिक समस्याएं हैं। मुस्लिम धर्म के नारी की स्थिति बहुत चिन्ताजनक है। इस पर हमें विचार करना है। इसके पहले होते इस्लाम धर्म की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें जानना आवश्यक है। इसकी पृष्ठभूमि में ही नारी की स्थिति को समझ सकेंगे।

श्री सांवलिया बिहारीलाल वर्मा लिखते हैं. "इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद साहब का जन्म सन 570 ई. में अरब के मक्का शहर में हुआ था। उन दिनों जदीस समूह आदि प्राचीन जातियों के अतिरिक्त इस्माइल और यहूदी वंश के लोगो अरब में बसते थे। अरबवासियों की अवस्था उन दिनों बहुत खराब थी। नरर्वाल व्यभिचार, धूत और मद्यपान आदि का उनमें बड़ा प्रभाव था। पिता की अनगिनत स्त्रियां दायभाग के तौर पर पूत्रों में बांट दी जाती थीं. जिन्हें वे अपनी स्त्री बना लेते थे। युद्ध के कैदियों के साथ उनकी स्त्रियों और बच्चों का भी शिरच्छेदन उस काल को एक साधारण प्रथा थी। मुहम्मद के जन्म के दो मास बाद उनके पिता और छह वर्ष को अवस्था में उनकी माता की मृत्यु हो गई। उनके दादा और फूफा ने उनका पालन किया।" इस समय "मूर्ति-पूजा चरम पर थी। केवल काबे में ही 360 प्रस्तर मूर्तियां थीं। काबे की परिक्रमा नग्नावस्था में करने की प्रथा प्रचलित थी। अरब समाज अनेक कबीलों में विभाजित था और प्रत्येक कबीले का अलग-अलग देवता था। ये देवता लकड़ी, पत्थर, पीतल तांबे, पशु या वृक्ष की होती थी। कुछ देव-प्रतिमाएं आकृतिहीन नी थीं। चन्द्रमा, सूर्य तथा आकाशीय पिंडों की भी पूजा-अर्चना होती थी1 कुरान ने ननेकेश्वरवाद और मूर्ति पूजा का डट कर विरोध किया, आर्थिक शोषण का अंतकिया। अरब में मूर्ति पूजा के इतिहास के संबंध में राहुल सांस्कृत्यायन लिखते हैं: "हुब्ल', 'लात' 'मनात', 'उज्ज' आदि अनेक भिन्न-भिन्न देव प्रतिमाएं उस समय अरब के प्रत्येक कबीले में लोगों की इष्ट थी। बहुत पुराने समय में वहां मूर्ति पूजा नहीं थी। 'अमरू' नामक काबा के एक प्रधान-पूजारी ने 'शाम' देश में सुना कि इनकी आराधना से दुष्काल से रक्षा और शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। उसी ने पहले-पहल 'शाम' से कुछ मूर्तियां लाकर काबा के मन्दिर में स्थापित की। देखा-देखी इसका प्रचार इतना बढ़ा कि सारा देश मूर्ति-पूजा में निमग्न हो गया। अकेले 'काबा' मन्दिर में 360 देव-मूर्तियां थीं, जिनमें हब्ल जो छत पर स्थापित था कुरेश वंशियों का इष्ट था। अब' हुब्ल उनका जातीय घोष था। लोग मानते थे कि यह मूर्तियां ईश्वर को प्राप्त कराती हैं, इसीलिए वे उन्हें पूजते थे। अरबी में 'इलाह' शब्द देवता और उनकी मूर्तियो के लिए प्रयुक्त होता है; किन्तु 'अल्लाह' शब्द

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

'इस्लाम' काल से पहले उस समय भी एक ही ईश्वर के लिए प्रयुक्त होता था।" मुहम्मद जी ने "ईश्वर के दिव्य आदेश को प्राप्त कर मक्का के दाम्भिक पुजारियों और सभागत यात्रियों को 'कुरान' का उपदेश सुनाना आरम्भ किया। मेले के खास दिनों (इहराम के महीनों) में दूर से आए हुए तीर्थ-यात्राओं के समूह को छल पाखण्डयुक्त लोकाचार और अनेक देवताओं की उपासना का खण्डन करके, वह एक ईश्वर 'अल्लाह' की उपासना और शुद्ध तथा सरल धर्म के अनुष्ठान का उपदेश करते है।

**शोध निबंध का उद्देश्य-**

भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करना और वैश्वीकरण के प्रभाव में मुस्लिम नारी सशक्तिकरण पर दृष्टिक्षेप डालना है।

**मुस्लिम नारी की स्थिति -**

मुस्लिम समाज में नारी की क्या स्थिति है और क्यों है? उनकी बदहाली की पृष्ठभूमि में क्या चीजें हैं। जिनके आधार पर हमें उनकी वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए। इस संबंध में जोया हसन बेलाग लिखती हैं, "मुस्लिम समाज में औरत की स्थिति को दो नजरियों से देखना चाहिए। पहला यह है कि मुस्लिम औरत को हिन्दुस्तान के समाज में क्या स्थिति है? इसके जवाब में यह कहना बिल्कुल सही होगा कि मुस्लिम औरतों की स्थिति मुस्लिम समाज में अच्छी नहीं है, ऐसा इसलिए कि हिन्दुस्तान मुस्लिम समाज में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है. कोई समाज सुधार जैसा काम नहीं हुआ है और मुस्लिम पर्सनल लॉ पिछले 60-70 सालों से बिना किसी तब्दीली के कायम है। मुस्लिम पर्सनल लॉ में किसी तरह की तब्दीली नहीं होना औरत की स्थिति को और भी खराब करता है। दूसरा सवाल है कि हिन्दुस्तान के समाज में मस्लिम औरत की स्थिति और दुनिया में जो नजरिया है, वह बंधा-बंधाया है। मुस्लिम औरतों की स्थिति पर बात हमेशा इस्लाम के नजरिए से की जाती है। यह नजरिया हो गलत है। कान में औरत के बारे में क्या लिखा है. इस नजरिए से मुस्लिम औरत की स्थिति पर बात करना गलत दृष्टिकोण है। दूसरे धर्म की औरतों की स्थिति पर बात करते के समय धर्म केन्द्र में नहीं होता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से नारी की स्थिति पर हम अब विचार करते हैं. तो सर्वप्रथम यह देखने का प्रयास करते हैं कि परिवार में उसकी स्थिति किस प्रकार की है। परिवार की आय, स्तर, शिक्षित अथवा अशिक्षित परिवार प्रगतिशील अथवा परम्परावादी आदि। दूसरा परिवार की आर्थिक स्थिति क्या है? यदि आर्थिक-सामाजिक स्थिति अच्छी है, तो निश्चय ही नारी की स्थिति अच्छी होगी। वह - शिक्षित और कामकाजी भी होगी। धर्म को केन्द्र में रखकर जब औरत को चारदीवारियों में हम बंदी बना देते हैं तो फिर उसकी स्थिति का मूल्यांकन कैसा। वह तो खूंटी से बंधी गाय की तरह होती है। पौधा वृक्ष तभी बनता है जब उसे उचित वातावरण मिलता है। उचित देखभाल होती है, तभी उसमें फल-फूल लगते हैं। इसे हमें देर-सवेर प्रयोग में लाना ही होगा तभी मुस्लिम औरतें उन्नति की सीढ़ियां चढ़ सकेंगी। यह सीढ़ियां शिक्षा के छोटे-बड़े गलियारों से होकर ही गुजरती हैं। मुस्लिम औरत की स्थिति को लेकर एक सर्वे किया गया जिसका नाम था, "डाइवर्सिटी आफ मुस्लिम वीमेन लिव्स इन इण्डिया"। इसमें भारत के 12 राज्यों के 40 जिलों को शामिल किया गया। ऐसे राज्योंमुस्लिम महिलाएं देश में शैक्षिक रूप से वंचित, आर्थिक रूप से कमजोर, समाजिक रूप से अलग-थलग और राजनीतिक रूप से हाशिए पर हैं। मुस्लिम समुदाय में महिला साक्षरता सबसे कम है। भारत में मुस्लिम महिलाएं लगभग हर मोर्चे पर अभाव से पीड़ित हैं। भारतीय समाज और राजनीति दोनों में मुस्लिम महिलाओं की खराब स्थिति एक गंभीर चिंता

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

का विषय है। उनकी वर्तमान स्थिति में सुधार न केवल समुदाय की प्रगति और आधुनिकीकरण में बल्कि पूरे देश के विकास और आधुनिकीकरण में भी योगदान देगा। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इस्लाम को यदि मूल्यांकित किया जाये तो इस्लाम में महिला व पुरुष दोनों ही समाज का महत्वपूर्ण अंग हैं तथा सैद्धान्तिक रूप से कुरान में लैंगिक समानता के सिद्धान्त पर बल दिया गया है। इस्लाम ने सामाजिक व धार्मिक हितों को ध्यान में रखकर महिला व पुरुष दोनों का कार्यक्षेत्र निर्धारित कर दिया है।

इस्लाम विचारधारा में मुस्लिम महिलाओं के बारे समान अधिकार देता है और उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व को तथ्यात्मक रूप से पहचानता है। भले ही इस्लाम पुरुषों और महिलाओं की समानता पर जोर देता है, फिर भी व्यवहार में कई क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता बहुत व्यापक स्तर पर है। इस्लाम और सामाजिक आर्थिक आधारों के बारे में विभिन्न ऐतिहासिक, उनकी स्थिति भी आदर्श मानदंडों से बहुत अधिक अलग है। मुस्लिम महिलाओं के अधिकार और विशेषाधिकार द्वारा जोर दिया गया है। 'पवित्र कुरान बार-बार पुरुषों और महिलाओं के साथ समान व्यवहार करने की आ कारा हर्द ता इस्लाम के इतिहास में महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया जाता है। अब यह तर्क दिया जाता है कि इस्लाम धन नाहलाओं के स्थान को रूढ़िवादी और कट्टरपंथी ताकतों ने दबा दिया है। मुस्लिम समाज में देखी गई महिलाओं की निष्क्रियता, एकांत और सीमांत स्थिति का इस्लामी विचारधारा से बहुत कम लेना-देना है, लेकिन इसके विपरीत पितृसत्तात्मक वैचारिक धारा है जिसे इस्लाम से अलग माना जा सकता है और आधिकारिक और प्रतिक्रियावादी ताकतों द्वारा सत्ता के शोषण का प्रभाव मुस्लिम समाज में व्याप्त है। इस्लाम विचारधारा और महिलाओं के बारे में वर्तमान प्रथाओं के बीच अब तक अंतर व्याप्त है। मुसलमान देश के विभिन्न हिस्सों में रह रहे हैं. इसलिए वे इस्लामी विचारधारा के साथ-साथ स्थानीय परंपरा दोनों से प्रभावित हैं। हमारी सामाजिक तस्वीर में कई दाग है जैसे मुस्लिम महिलाएं कुपोषण, अंधविश्वास, अशिक्षा और मुल्ला (कट्टरपंथी) के अज्ञानी शासन के तहत् जी रही है। कट्टरपंथी मौला ने मुस्लिम महिलाओं में आधुनिक तकनीक और चिकित्सा विज्ञान के बारे में गलत धारणा बनाई है, जिससे सभी बीमारियों को केवल मुल्ला से ठीक किया जा सकता है और उनमें इंसान के बीच हर तरह की समस्या को समझने और जवाब देने की शक्ति है। इसी तरह वे मानते हैं कि हमारी पवित्र पुस्तक में वर्णित है कि हर वैज्ञानिक एवं आर्थिक सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए मुल्ला साम हैं। कट्टरवाद (मुल्ला राज) ने घोषणा की थी कि मुस्लिम क्षेत्र में महिला नेतृत्व या सशक्तिकरण निषिद्ध है। हालांकि, मुस्लिम महिलाओं में बढ़ती साक्षरता दर यह दर्शाती है कि मुल्लाओं की मान्यताएं धीरे-धीरे मिटती जा रही हैं और यह मुस्लिम समुदाय आधुनिक सोचों के अनुरूप अपने आपको बदल रही है। वास्तव में इस्लाम धर्म ने एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाष और मुस्लिम समुदाय में महिलाओं के उन्नयन के लिए जो कुछ भी आवश्यक था, उसकी सुरक्षा के लिए आगे आए। मुस्लिम समाज में महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण, संरक्षण और प्रचार को इस्लामी कानून और पवित्र कुरान द्वारा उजागर किया गया है।

**वैश्वीकरण और मुस्लिम नारी का सशक्तीकरण-**

वर्ष 1990 के दौर से वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने पूरी दुनिया को एक गांव के रूप बदल दिया। दुनिया का हर मुल्क आर्थिक रूप से जुड़ गया। यह साम्राज्यवादी एजेन्डा की एक गोपनीय या अप्रत्यक्ष आर्थिक नीति है। उसने धीरे-धीरे नव-आर्थिक उपनिवेशवाद की स्थापना की है। एक ऐसा बाजार बन रहा है.

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

जिसमें उसके उत्प ज्यादा से ज्यादा बिकें। इस वैश्विक बाजारवाद का सीधा सा अर्थ और उद्देश्य है मुनाफा सशक्तीकरण' में डॉ. वी.एन. सिंह ने लिखा है-"नव-आर्थिक उपनिवेशवाद लाभ को लाभ कमाना और अपने देश की मंदी को कम करना। 'आधुनिकता योग नारी सशक्तिकरण' डॉ.वी एन सिंहने लिखा है-' नव आर्थिक उपनिवेशवाद लाभ को स्थापित करने हेतु सर्वोच्च उत्पादन के साधनों को जुटाता है. जिससे विशेष तौर मे विदेशों को अधिक लाभ पहुंच सके। यह एक छिपे पूंजीवादी एजेन्डा के तहत है। देश के व्यक्तियों के मन में धन सम्पत्ति, डालर, पाउंड अथवा पैकेज के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना है।

सूर्य के निकलने के साथ कोई समाज यह सोचे कि उनका प्रकाश उस पर नहीं पडेगा, इसे आप क्या कहेंगे- अज्ञानता, अशिक्षा, या सोचने का अभाव। वैश्वीकरण संसार के देशों में एक नई आर्थिक-सांस्कृतिक रोशनी लेकर उतरा है। एक नियोजित परिवर्तन की सोच उसके नियोजन में उजागर हो रही है। इस आर्थिक परिवर्तन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष हैं। विश्व की बडी कम्पनियों ने जीविका के अनेक विकल्प प्रस्तुत किए। इन नौकरियों में शिक्षा के नए आयाम सामने आए। पुराने शिक्षा का पैटर्न पीछे छूटता जा रहा है। आज विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन आदि में बड़े पैकेज का आकर्षण बढ़ता जा रहा है। युवा पीढ़ी में बड़े पैकेजों की महत्त्वाकांक्षा बढ़तीं जा रही है। यहां पर ध्यान देने की बात यह है कि आर्थिक बदलाव या आर्थिक ढांचे में जब भी उत्पादन की तकनीक में परिवर्तन होगा, उसका प्रभाव पूरे देश पर पड़ता है। हर जाति, धर्म और सम्प्रदाय का व्यक्ति और महिलाएं अपनी आर्थिक-सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करना चाहते हैं। वह परम्परागत व्यवसायी ढांचे से बाहर निकलता है और उत्पाद के एक नए बाजार में उतरता है। इसके लिए वह अपने को आधुनिक शिक्षा में लैस करता है। यह कहना गलत होगा कि भूमण्डलीकरण का प्रभाव केवल हिन्दू समाज की महिलाओं पर ही पड़ा है। हमारे देश की मुस्लिम महिलाओं पर भी उसका प्रभाव पड़ा है। आखिर वे भी समाज की अंग हैं। उनमें भी आर्थिक-सामाजिक व राजनीतिक चेतना ने जन्म लिया है। वे भी इस आर्थिक प्रतिस्पर्धा में पीछे नहीं रहना चाहती हैं। यही वजह है कि मुस्लिम स्त्रियां आज उच्च और तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। बी.टेक. एम.टेक, एम.सी.ए. सी.ए., सी.एस., कम्प्यूटर, प्रबंधन की डिग्रियां लेकर बड़े-बड़े पदों पर कार्यरत हैं। इसे अन्यथा न लें कि आखिर कोई बड़ी ओहदे पर कार्यरत महिला, जो हजारों मातहत कर्मचारियों से काम ले रही है, क्या वह पर्दे या बर्क में रहकर काम कर सकती है। ठीक इसी तरह राजनीति में मुस्लिम महिलाएं हैं। उन्होंने उन तमाम चीजों को छोड़ दिया है जो उनकी तरक्की के रास्ते में रुकावट डालती हैं। मोहसिना किदवई और शबाना आजमी जैसी सैकडों महिलाओं ने अपनी पहचान बनाई है। बिग-बास में आई मुस्लिम देश पाकिस्तान की वीना मलिक की अदाओं को क्या कहेंगे। डिग्री कॉलेज और विश्वविद्यालयों में झांककर देखें, वहां मुस्लिम महिलाएं किस रूप में हैं। किस पोशाक में हैं। मुस्लिम खिलाडी सायना मिर्जा को क्या कहेंगे, जो खेल के मैदान में खेल के कपडे पहनती है। उसने मुल्क का नाम रोशन किया है। कम्पनी के उत्पाद के प्रचार के लिए उसे अमबेस्डर बनाया जाता है। इसकी एवज में उसे करोडों रुपए दिए जाते हैं। यह अर्थ युग है। इसमें नारी का सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा सभी कुछ उसके अपने वेतन पर निर्भर करता है। उसे स्वावलम्बी ही नहीं बनाता बल्कि आदर का पात्र बनाता है। यहां हिन्दू और मुस्लिम के बीच रेखा खींचना कहीं से भी उचित नहीं। मुस्लिम औरतें अगर तरक्की करती हैं तो उसके परिवार बच्चों का स्तर भी ऊंचा होता है। वे अच्छे स्कूल और कॉलेज में पढ़ते हैं। उनके रहन-सहन का स्तर ऊंचा होता है।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

समाज में उन्हें ऊंचा दर्जा मिलता है। गरीबी और गरीब इन्हें समाज क्या देता है हम इससे सदियों से परिचित हैं। एक जागरूक मुस्लिम महिला आज बहुविवाह और तलाक को बुरा मानती है। इस प्रकार की कार्यवाही आज के वैज्ञानिक और प्रगतिशील समाज में कहीं से भी उचित नहीं कही जा सकती। धर्म की आड़ लेकर महिलाओं का शोषण करना कहीं से भी ठीक नहीं है,चाहे वह हिन्दू धर्म हो या और कोई। यह सामन्ती सोच ही है कि औरत घर की चारदीवारी में ही रहे। जाहिर है जब तक वह स्वावलम्बी नहीं बन पाएगी या उसे इसका अवसर नहीं दिया जाएगा, तब तक वह उनति नहीं कर सकती। भूमण्डलीकरण ने औरतों में जहां महत्त्वाकांक्षा बढ़ाई है वहीं नौकरी के अनेक छोटे-बड़े विकल्प दिए हैं। वह बहुत सी परम्परागत रूढ़िवादी बंदिशों से मुक्त हो रही है। मेरे बहुत से मुस्लिम मित्रों की पत्नी काम करती हैं। बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल व कॉलेज में पढ़ते हैं। लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं पर अपने धर्म के उसूलों को मानती हैं। सह-शिक्षा के कॉलेज से इन्हें कोई परहेज नहीं, आज समाज व शिक्षा से कटकर नहीं रह सकती हैं। हम यह कह सकते हैं कि क्योंकि आखिरकार इन्हें पुरुषों के बीच में ही रहकर काम करना है। जाहिर है लड़कियां है। दो दशकों में अनेक प्रकार के उथल-पुथल हुए, जिन्होंने महिलाओं की दुनिया को भूमण्डलीकरण ने धार्मिक आर्थिक व सामाजिक ढांचे को एक नया स्वरूप प्रदान किया है।

वैश्वीकरण ने बड़े पैमाने पर रोजगार और व्यापार के अवसरों को खोलने के संबंध में "ऊपर से" कई लाभ लाए हैं, और कुछ मामलों में, धन की पीढ़ी को सुगम बनाया है जो आम नागरिकों तक पहुँची है, जिससे जीवन स्तर को बढ़ाने के संबंध में अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। हालाँकि, कुल मिलाकर, ऐसे छोटे लाभ उन लोगों के लिए बहुत बड़ी कीमत पर आए हैं जो अभिजात वर्ग का हिस्सा नहीं हैं, खासकर विकासशील देशों में (जिन्हें अक्सर हाशिये पर स्थित देश कहा जाता है)। साथ ही, वैश्वीकरण ने "नीचे से" स्वदेशी प्रतिरोध आंदोलनों को सुगम बनाया है, जिन्हें अक्सर धार्मिक शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है, जो पहचान की राजनीति और महिलाओं की नैतिकता, व्यवहार और समाज में भूमिका पर अधिक नियंत्रण की ओर मुड़ते हैं, जो जाहिर तौर पर व्यापक सामाजिक असमानताओं को संबोधित करने के लिए होते हैं, लेकिन जो लैंगिक न्याय की प्राप्ति पर प्रतिबंधात्मक प्रभाव डालते हैं। यह अध्याय लिंग पर मुस्लिम व्याख्याशास्त्र की संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत करता है ताकि यह समझा जा सके कि कैसे मूलनिवासी प्रतिरोध आंदोलन महिलाओं के व्यवहार और पहनावे को इस्लामी परंपरा की प्रामाणिकता और अखंडता के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करने में सक्षम रहे हैं, ताकि वे पश्चिमी वर्चस्ववादी प्रथाओं का विरोध करने का प्रयास कर सकें। इसके बाद यह मुस्लिम नारीवादी व्याख्याशास्त्र, आर्थिक अभाव और लैंगिक हिंसा, और पूंजीवादी प्रथाओं और महिलाओं के शरीर पर चर्चा करता है।

तात्पर्य, वैश्वीकरण ने मुस्लिम महिलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, परंतु शिक्षा, तकनीकी पहुँच और वैश्विक संवाद से वे अब अधिक सशक्त हो रही हैं। यह आवश्यक है कि वैश्वीकरण को एक साधन के रूप में देखा जाए, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर मुस्लिम महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मसम्मानी बनाए।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

**मुस्लिम महिलाओं की चुनौतियां-**

विविध और जटिल हैं, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती हैं। कुछ प्रमुख चुनौतियां निम्नलिखित हैं।

सामाजिक चुनौतियां :-

1. लैंगिक भेदभाव :- मुस्लिम महिलाओं को अक्सर लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जैसे कि शिक्षा और रोजगार में अवसरों की कमी।
2. पितृसत्तात्मक समाज :- मुस्लिम समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण महिलाओं को अक्सर घरेलू और पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित रखा जाता है।
3. विवाह और तलाक :- मुस्लिम महिलाओं को विवाह और तलाक के मामलों में अक्सर असमानता का सामना करना पड़ता है, जैसे कि तलाक के अधिकार में कमी।

आर्थिक चुनौतियां

1. आर्थिक असमानता :- मुस्लिम महिलाओं को अक्सर आर्थिक असमानता का सामना करना पड़ता है, जैसे कि नौकरी के अवसरों में भेदभाव और कम वेतन।
2. शिक्षा और कौशल की कमी :- मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा और कौशल की कमी एक बड़ी समस्या है, जो उनके आर्थिक अवसरों को सीमित करती है।

राजनीतिक चुनौतियां :-

1. राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी :- मुस्लिम महिलाओं को अक्सर राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी का सामना करना पड़ता है, जैसे कि संसद और अन्य राजनीतिक संस्थानों में उनकी उपस्थिति की कमी।
2. कानूनी अधिकारों की कमी :- मुस्लिम महिलाओं को अक्सर कानूनी अधिकारों की कमी का सामना करना पड़ता है, जैसे कि व्यक्तिगत कानूनों में भेदभाव।

सांस्कृतिक चुनौतियां :-

1. सांस्कृतिक रूढ़िवादिता :- मुस्लिम महिलाओं को अक्सर सांस्कृतिक रूढ़िवादिता का सामना करना पड़ता है, जैसे कि पारंपरिक मान्यताएं और रूढ़िवादी विचार।
2. मीडिया में प्रतिनिधित्व की कमी :- मुस्लिम महिलाओं को अक्सर मीडिया में प्रतिनिधित्व की कमी का सामना करना पड़ता है, जैसे कि उनकी आवाज़ और दृष्टिकोण की अनुपस्थिति।

अन्य चुनौतियां :-

1. स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी :- मुस्लिम महिलाओं को अक्सर स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी का सामना करना पड़ता है, जैसे कि स्वास्थ्य केंद्रों और विशेषज्ञ डॉक्टरों की अनुपलब्धता।
2. शिक्षा और जागरूकता की कमी :- मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता की कमी एक बड़ी समस्या है, जो उनके अधिकारों और अवसरों को सीमित करती है।

मुस्लिम महिलाओं की चुनौतियां विविध और जटिल हैं, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए शिक्षा, आर्थिक अवसर, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सांस्कृतिक परिवर्तन जैसे प्रयासों की आवश्यकता है।

**निष्कर्ष:-**

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

किसी भी मानव समाज के निर्माण में पुरुष और महिला की समान भागीदारी होती है। शारीरिक असमानता के बावजूद भी दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व होता है और दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। दुनिया के तमाम धर्म एवं मानव समाज में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को बराबर अधिकार प्राप्त नहीं है। उन्हें कोमलता, त्याग और बलिदान की मूरत बनाकर पेश किया गया है। इस्लाम धर्म में महिलाओं को हक प्रदान किया गया है। इसके बावजूद भी भारतीय समाज में मुस्लिम स्त्रियों की वास्तविक स्थिति निराशाजनक रही है। गरीबी, अशिक्षा एवं धार्मिक कट्टरता और गलत व्याख्या के कारण बहुसंख्यक मुस्लिम स्त्रियों की सामाजिक स्थिति शोचनीय है। स्वतंत्र भारत में यह स्थिति कुछ हद तक सुधर रही है। विभिन्न सरकारों द्वारा इनके कल्याण के लिए विभिन्न योजनाएं भी बनी है। वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा, व्यवसाय एवं अन्य क्षेत्रों में महिलाओं ने नया मुकाम हासिल कर रही है। मुस्लिम शिक्षा एवं जागरूकता के प्रसार से भारतीय मुस्लिम महिलाओं का भविष्य उज्ज्वल है। आने वाले समय में निश्चित रूप से वह भारतीय समाज में अपनी सशक्त भूमिका का निर्वहन करेंगी।मुस्लिम महिलाएं देश में शैक्षिक रूप से वंचित, आर्थिक रूप से कमजोर, समाजिक रूप से अलग-थलग और राजनीतिक रूप से हाशिए पर हैं। मुस्लिम समुदाय में महिला साक्षरता सबसे कम है। भारत में मुस्लिम महिलाएं लगभग हर मोर्चे पर अभाव से पीड़ित हैं। भारतीय समाज और राजनीति दोनों में मुस्लिम महिलाओं की खराब स्थिति एक गंभीर चिंता का विषय है। उनकी वर्तमान स्थिति में सुधार न केवल समुदाय की प्रगति और आधुनिकीकरण में बल्कि पूरे देश के विकास और आधुनिकीकरण में भी योगदान देगा। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इस्लाम को यदि मूल्यांकित किया जाये तो इस्लाम में महिला व पुरुष दोनों ही समाज का महत्वपूर्ण अंग हैं तथा सैद्धान्तिक रूप से कुरान में लैंगिक समानता के सिद्धान्त पर बल दिया गया है। इस्लाम ने सामाजिक व धार्मिक हितों को ध्यान में रखकर महिला व पुरुष दोनों का कार्यक्षेत्र निर्धारित कर दिया है।

वैश्वीकरण ने मुस्लिम महिलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, परंतु शिक्षा, तकनीकी पहुँच और वैश्विक संवाद से वे अब अधिक सशक्त हो रही हैं। यह आवश्यक है कि वैश्वीकरण को एक साधन के रूप में देखा जाए, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर मुस्लिम महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मसम्मानी बनाए।

## संदर्भः-

1.https://www.alliance.edu.in
2.https://www.questjournals.org.in
3.https://www.inspirajournals.com
4. शर्मा पी.डी.(2017) 'महिला सक्षमीकरण आणि फेमिनिझम' रावत प्रकाशन जयपूर.
5. कपूर प्रमिला 'वर्किंग इंडियन वुमन' राजकमल अँड सन्स, दिल्ली.
6. सिंग व्ही.एन. (२०१८) 'स्त्रीवाद' रावत प्रकाशन जयपूर.
7. सिंग व्ही.एन. (2010) 'मॉडर्निटी अँड वुमन पब्लिकेशन जयपूर.
8. वी.एन.सिहं, जनमेजन सिंह (2018) 'नारीवाद' रावत पब्लिकेशन,जयपुर.
9. सिंह वि.एन, सिंह जन्मेजय.(2010)'आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण' रावत पब्लिकेशन, जयपुर.